Research Journal of Language, Literature and Humanities ISSN 2348-6252
Vol. **2(1),** 14-16, February **(2015)** *Res. J. Lang. Lit. Humanities*

शास्त्रीय संगीत में प्रचार–प्रसार के माध्यमों का योगदान (इलेक्ट्रानिक माध्यमों के विशेष संदर्भ में)

सुवर्णा तावसे
प्राध्यापक एवं संगीत विभागाध्यक्ष, वाद्य संगीत, माता जीजा बाई शासकीय, कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मोती तबेला, इन्दौर

Available online at: www.isca.in, www.isca.me
Received 30th October 2014, revised 5th February 2015, accepted 17th February 2015

सारांश

प्राचीन समय से आज तक निरन्तर सामाजिक परिस्थिति बदलती रही है, जिसका कारण है समय के साथ–साथ मानवीय मूल्य और उसके रहन–सहन, सोचने, विचार करने के ढंग में परिवर्तन आना।

शब्दखोजः शास्त्रीय संगीत, प्रचार–प्रसार, योगदान, इलेक्ट्रानिक, विशेष संदर्भ।

प्रस्तावना

आज का सामाजिक जीवन अत्यन्त जटिल हो गया है। व्यक्ति सुबह से रात तक अपने कामों में इतना उलझा हुआ है कि उसे मनोरंजन एवं मानसिक शांति के लिए समय देना बड़ा ही मुश्किल हो रहा है। ऐसी स्थिति मनुष्य को अपनी आत्म शांति के लिए एक संगीत का ही आधार है। आज की जटिल परिस्थिति में शास्त्रीय सांगीतिक क्षेत्र के प्रचार एवं प्रसार के माध्यमों का अद्वितीय योगदान रहा है।

प्रचार एवं प्रसार का साधारण अर्थ किसी भी वस्तु, विषय एवं कला के विकास के रुप में लिया जा सकता है। किसी भी विषय के स्वरुप का विस्तार करना ही प्रचार करना है। जन–जन में उस विषय को व्यापक बनाना ही प्रचार का दूसरा नाम है। प्रचार के माध्यम से ही विषय के क्षेत्र में वृद्धि होती है और जब प्रचार होता है तभी उस विषय का प्रसार है। प्रचार एवं प्रसार ये दोनों शब्द एक दूसरे से जुड़े होने के कारण इन दोनों का माध्यम भी एक ही रहेगा। माध्यम अर्थात् इन दोनों के द्वारा जब किसी विषय का विस्तार होगा एवं विस्तार हेतु कोई साधन का मध्यस्थी का प्रयोग होना आवश्यक होता है जिसका स्वरुप मूर्त होता है। ये साधन उस विषय का प्रचार एवं प्रसार करने में मुख्य रुप से सहायक होते हैं।

संगीत मुख्य रुप से एक श्रव्य कला है और इस कारण वह विकास के उद्देश्य से हमेशा किसी न किसी माध्यम पर निर्भर रही है और इस उद्देश्य पूर्ति हेतु प्रचार–प्रसार के साधनों का संगीत में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। संगीत को सुनने के लिए किसी माध्यम का होना आवश्यक होगा जैसे–रेडियो, टी.वी., संगीत–सम्मेलन आदि इस प्रकार से संगीत प्रचार–प्रसार के साधनों से जुड़ा हुआ है। शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार में निम्नलिखित माध्यमों का प्रयोग संगीत के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है– 1.शिक्षण–संस्थाएँ, 2. संगीत समारोह एवं गोष्ठियाँ, 3. संगीत प्रतियोगिता, 4. संगीत संस्थाएँ, 5. संगीत संबंधी विभिन्न ग्रंथ एवं पत्र पत्रिकाएँ, 6. फिल्म, 7. ललित कला अकादमी, 8.संगीत नाटक अकादमी, 9. इलेक्ट्रानिक माध्यमः रेडियो, दूरदर्शन (टी.वी.), ग्रामोफोन, कैसेट व रिकार्ड, कम्प्यूटर एवं सी.डी. प्लेयर.

उपरोक्त माध्यमों के अलावा और भी माध्यम हैं जिनके द्वारा संगीत को प्रचार–प्रसार द्वारा संगीत जन–जन तक पहुंचाया जा सकता है। संगीत यह एक कला है जो विशेष रुप से श्रव्य कला होने के कारण संगीत के विकास में इन साधनों का महत्वपूर्ण योगदान है, क्योंकि इन साधनों का आज इतना विस्तार हो चुका है और इन सभी साधनों को समाज अच्छी दृष्टि से देखता है। अब मैं शास्त्रीय संगीत के 'इलेक्ट्रानिक माध्यमों' पर प्रकाश डालने का प्रयास करुंगी।

वर्तमान स्थिति के लिए संगीत की दृष्टि से माईक, रेडियो, टी.वी., वी. सी.आर., कैसेट, टेप रिकार्डर आदि साधन अपना बड़ा महत्व रखते हैं।

रेडियो

भारतीय संगीत के इतिहास की यह एक क्रान्तिकारी घटना थी। लोकतांत्रिक व्यवस्था के यांत्रिक साधनों में विशेषतः रेडियो की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। संसार की ताजा गतिविधियों में जनता का तत्काल परिचय रेडियो के कारण ही हुआ है। रेडियो ने सम्पूर्ण मानव–जाति को प्रगति के पथ पर अग्रसर होने में महत्वपूर्ण अवसर दिये हैं।

वैसे तो सभी कलाओं पर आकाशवाणी अथवा रेडियो का कुछ–न–कुछ प्रभाव अवश्य पड़ा, लेकिन इस माध्यम का संबंध संगीत से अधिक रहा है जिसका कारण है संगीत का एक श्रव्य कला होना।

संगीत के लिए रेडियो वरदान सिद्ध हुआ है। उच्चकोटि के संगीतज्ञ भी रेडियो की महत्ता को, स्वीकार कर चुके हैं। शास्त्रीय संगीत को जन–सुलभ व लोकप्रिय बनाने में जो महत्वपूर्ण भूमिका आकाशवाणी ने निभाई है उसके महत्व को भुलाया नहीं जा सकता।

जन साधारण में सांगीतिक जागृति होने के उद्देश्य से आकाशवाणी का ''रेडियो संगीत सम्मेलन'' का आयोजन एक उत्तम प्रयास है। आकाशवाणी के लगभग सभी केन्द्र पर प्रायः आमंत्रित श्रोताओं के समक्ष शास्त्रीय व सुगम संगीत सम्मेलनों का आयोजन करते रहते हैं। उनमें से अनेक केन्द्र ऐसे भी हैं जो अपने शहर से बाहर जाकर दूसरे शहरों में भी अपनी सभाओं का आयोजन करके कलाकारों को प्रत्यक्ष देखने–सुनने का अवसर स्थानीय श्रोताओं को प्रदान करते हैं। रेडियो के ये सांगीतिक सम्मेलन निश्चित ही जनता में संगीत का प्रचार–प्रसार करने में उपयोगी हैं।

रेडियो पर संगीत संबंधी परिचर्चाओं के अन्तर्गत 1954–55 में रेडियो पर पहली बार आमंत्रित श्रोताओं के समक्ष इनका आयोजन प्रारंभ हुआ। जिसमें उत्तरी व दक्षिणी संगीत के समस्याओं पर विचार विमर्श किये गए।

रेडियो पर संगीत कक्षा के अन्तर्गत स्टूडियो के अन्दर ही किसी शिक्षक की विद्यार्थियों के साथ क्लास लगाई जाती है ताकि संगीत के सामान्य ज्ञान श्रोताओं में हो सके। संगीत कक्षाओं के अतिरिक्त 'प्रश्न–मंच' के आयोजन भी होते हैं जिससे श्रोताओं को भारतीय संगीत के विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी होती है।

इसी प्रकार अखिल भारतीय संगीत का राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन रेडियो करता है। यह राष्ट्रीय कार्यक्रम का आयोजन निःसंदेह शास्त्रीय संगीत के सर्वोन्मुख उन्नति का अभूतपूर्व प्रयत्न है।

भारत के विभिन्न स्थानों पर सांगीतिक सम्मेलनों का प्रसारण भी आकाशवाणी द्वारा होता है।

उपर्युक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त दैनिक प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की संख्या भी काफी है। शास्त्रीय संगीत पर आधारित कार्यक्रम 'संगीत–सरिता' का प्रसारण होता है जिसमें किसी भी एक राग की सम्पूर्ण जानकारी दी जाती है। इसी प्रकार स्थानीय वरिष्ठ कलाकारों तथा उच्च स्तरीय कलाकारों का गायन–वादन होता है। यह भी शास्त्रीय संगीत का श्रेष्ठ कार्यक्रम है। 'अनुरंजनी' नामक शास्त्रीय कार्यक्रम का प्रसार विविध भारती द्वारा किया जाता है। जिसमें अच्छे–अच्छे कलाकारों का गायन–वादन सुनाया जाता है। इसी प्रकार रात में शास्त्रीय संगीत संबंधी कार्यक्रम प्रसारित होते हैं जो संगीत के प्रचार–प्रसार में विशिष्ट योगदान देते हैं।

इस प्रकार के कार्यक्रम प्रसारित होने से जनता में शास्त्रीय संगीत के प्रति रुचि बढ़ती है इस प्रकार रेडियो संगीत के विकास में एक माध्यम के रुप में प्रमुख रुप से सहायक है।

दूरदर्शन

यह वर्तमान संगीत को विज्ञान की एक महत्वपूर्ण देन है। आज रेडियो के समान ही दूरदर्शन भी संगीत के प्रचार–प्रसार का उत्तम माध्यम बनता जा रहा है। आज देश में लगभग सभी दूर यह पहुंच चुका है। इसमें सुनने के साथ–साथ चित्र भी दिखाई देता है। इस प्रकार संगीत के प्रचार का श्रव्य व दृष्य इन दोनों क्रियाओं से आनंद लिया जा सकता है। इस क्षेत्र दिन–प्रतिदिन विकसित होता जा रहा है।

दूरदर्शन से सभी प्रकार के कार्यक्रमों का प्रसारण होता है। जिसमें शास्त्रीय संगीत के भी कई कार्यक्रम प्रसारित होते हैं उसी प्रकार उप–शास्त्रीय व सुगम संगीत के कार्यक्रमों का भी प्रसारण होता है।

दूरदर्शन पर दैनिक प्रसारण में भी संगीत के लिए काफी समय दिया जाता है। शास्त्रीय संगीत से संबंधित प्रसारण भी होता है। रोज प्रातः कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है जिसके अन्तर्गत प्रातःकालीन रागों का प्रसारण होता है। इस कार्यक्रम में उत्तर–दक्षिण भारतीय दोनों पद्धतियों का गायन वादन प्रस्तुत होता है। सुगम संगीत से संबंधित कार्यक्रम का भी दैनिक प्रसारण होता रहता है।

इसी प्रकार दूरदर्शन पर शास्त्रीय संगीत पर आधारित जुगलबन्दी पेश की जाती है। इसमें एक कलाकार दक्षिण संगीत का व एक कलाकार उत्तरी संगीत का होता है। यह कार्यक्रम काफी प्रशंसनीय है।

दूरदर्शन द्वारा संगीत से संबंधित वृत्त चित्र का भी समय–समय पर प्रसारण होता है। जिसमें बड़े–बड़े कलाकार, संगीतज्ञ व उनके घरानों संबंधी बतलाया जाता है। वाद्य संगीत पर भी वृत्त चित्र प्रसारित होते हैं। इसी प्रकार दूरदर्शन द्वारा देश में हो रहे सांगीतिक उत्सव एवं सम्मेलनों की रिपोर्ट समय–समय पर प्रसारित होती है।

दूरदर्शन पर शास्त्रीय संगीत का शैक्षणिक कार्यक्रम भी प्रसारित होता है जिसमें छोटे–छोटे बच्चों को किसी राग की शिक्षा दी जाती है।

इस प्रकार दूरदर्शन पर शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत व उसके विभिन्न प्रकारों से संबंधित अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं। दूरदर्शन के संगीत प्रसारण से संगीत के प्रति काफी झुकाव बढ़ा है। जिससे लोगों में संगीत के प्रति आसक्ति का भाव जागृत हुआ है।

इस प्रकार दूरदर्शन के संगीत संबंधी विविध प्रकार के कार्यक्रमों के प्रसारण से संगीत का प्रचार एवं प्रसार हुआ है।

ग्रामोफोन

ग्रामोफोन का अविष्कार एडीसन से 1877 में किया। इसके अविष्कार ने एक क्रान्ति ला दी। ध्वनि विस्तारक यंत्रों से केवल श्रोताओं की संख्या बढ़ी पर ग्रामोफोन रिकार्ड के अविष्कार से विभिन्न कलाकारों की कला वहाँ तक पहुँची जहाँ श्रोता इन सब परिधियों से बाहर था। गाँव–गाँव में ग्रामोफोन रेकार्ड की प्रतियाँ पहुंची और विभिन्न कलाकारों की कला भी पहुंची।

इस माध्यम से एक ही रचना को बार–बार कितनी भी बार, किसी भी समय सुना जा सकता था। इसका मूल्य भी आदमी के लिए सुलभ था। जहाँ शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम काफी लम्बे होते थे वहाँ समय–सीमा में आ गए। बड़े–बड़े कलाकारों के रेकार्ड उस्ताद फैयाज खाँ, अब्दुल करीम खाँ, पं. डी.वी. पलुस्करजी के तीन मिनिट के रेकार्ड आज भी उपलब्ध हैं।

ग्रामोफोन रेकार्ड के अविष्कार के पहले कलाकार के साथ ही उसकी कला का लोप हो जाता था। किन्तु ग्रामोफोन के माध्यम से आज भी पुराने समय के उच्चकोटि के कलकारों की कला का आनंद लिया जा सकता है। कलाकार को सुनने के लिए कलाकार का उपस्थित रहना आवश्यक नहीं रहा।

ग्रामोफोन के अविष्कार से संगीत का प्रचार केवल अपने देश में ही नहीं हुआ बल्कि अपनी कला का प्रचार विदेशों में भी हुआ। शिक्षा के साथ शास्त्रीय संगीत का भी प्रचार बढ़ रहा है।

केसेट व टेप रेकार्ड

यह भी वर्तमान संगीत को विज्ञान की एक उपयोग व महत्वपूर्ण देन है। कैसेट व रेकार्ड का प्रयोग क्रमशः केसेट प्लेयर व टेप रेकार्डर के माध्यम से किया जाता है। इन चित्रों का आज संगीत जगत में काफी महत्व बढ़ गया है। इनके द्वारा घर बैठे मन चाहे संगीत का आनंद लिया जा सकता है। कैसेट के क्षेत्र में गत वर्षों से ही सीरिज कम्पनी द्वारा निकाले गये शास्त्रीय संगीत के कलाकारों के केसेट काफी मात्रा में प्रचार में आ गए। इसी प्रकार ''म्युजिक टुडे'' नामक कैसेट कम्पनी भी सर्वप्रथम 16 कैसेटों का एक सेट बनाया जिसमें सुबह, दोपहर, शाम और रात के रागों को चार–चार कैसेटों में चुनकर कुल 16 कैसेटों का निर्माण किया जिसमें लोकप्रिय व युवा कलाकारों द्वारा गाये बजाए राग हैं। इसी प्रकार आकाशवाणी द्वारा अपने संग्रहालय की दुर्लभ रेकार्डिंग को कैसे पर लाने का सिलसिला निरन्तर जारी है। वादन के क्षेत्र में भी कई कैसेट निकाले गए जिसमें उनके वादन के साथ बातचीत भी शामिल है जिनमें उस्ताद अमजद अली खाँ व पं. ब्रजनारायण आदि कलाकारों के हैं।

एच.एम.वी. ने अपने पुराने संग्रह के उस्ताद विस्मिल्लाह खाँ की शहनाई, बड़े गुलाम अली खाँ की ठुमरियाँ, रईस खाँ, अब्दुल हलीम जाफर खाँ के वादन जैसे कितने ही एलबम जारी किये हैं।

इसी प्रकार सी.डी. प्लेयर के द्वारा भी शास्त्रीय संगीत को सुन सकते हैं जो आज की नई तकनीक की देन है।

कम्प्यूटर

आज के वैज्ञानिक युग में कम्प्युटर ने सभी क्षेत्रों में अपना योगदान दिया है जिसमें संगीत भी अछूता नहीं है। कम्प्यूटर में शास्त्रीय संगीत की अलग–अलग वेबसाइट है जिसे इन्टरनेट के द्वारा कलाकारों को सुन सकते हैं एवं उनकी जानकारी भी हम प्राप्त कर सकते हैं। कम्प्यूटर के की–बोर्ड को हम सिंथेसाईजर की तरह प्रयोग कर सकते हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार इलेक्ट्रानिक माध्यमों के कारण वर्तमान समय में संगीत का प्रचार एवं प्रसार हुआ है। आज इन साधनों के माध्यम से ही संगीत जन–जन को अपनी ओर आकर्षित कर पाया है।

अतः इनके द्वारा संगीत का प्रचार एवं प्रसार अधिक सरलता से हो रहा है। प्राचीन समय से आज तक इन्हीं साधनों के द्वारा संगीत का समाज से घनिष्ठ संबंध रहा और संगीत निरन्तर प्रगति के मार्ग पर बढ़ता गया।

सन्दर्भ पुस्तकें

1. लक्ष्मीनारायण गर्ग–संगीत निबंध
2. राजीव त्रिवेदी–शास्त्र, शिक्षण व प्रयोग
3. संगीत कला विहार (पत्रिका)–जनवरी (1989)